Rise of Mussolini and Fascism(Part-4)

FOR:P.G.SEM-2,CC-6,UNIT-2

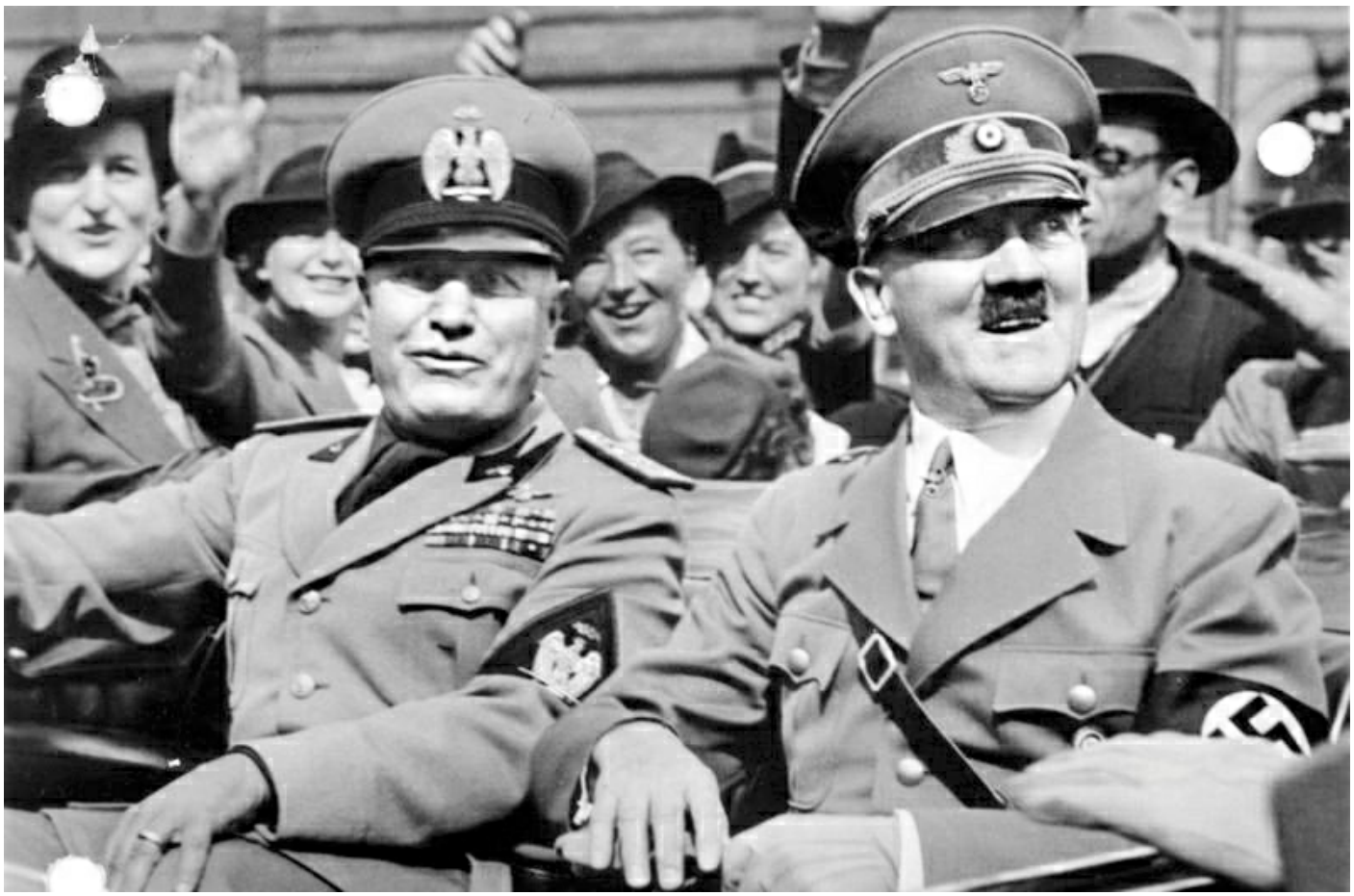

Italy's Duce Benito Mussolini(Left) with German's Fuhrer Adolf Hitler(Right)

**निगमित राज्य(Corporate State)-** बढ़ती हुई विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के कारण उत्पन्न कठिनाइयों को देखकर मुसोलिनी से 1933 ई. के अंत में राज्य की संपूर्ण अर्थव्यवस्था को पूर्ण रूप से निगमित ढांचे में ढालने का प्रयास किया ।उसने समस्त राष्ट्रव्यापी आर्थिक व्यवस्थाओं के लिए एक **निगम**(Corporation) के स्थापना की ,जिसमें मालिकों और मजदूरों के बराबर प्रतिनिधि रखे गए। ऐसे 22 **निगम** स्थापित किए गए जिसमें 8 कृषि के लिए, 8 उद्योग धंधों के लिए, और 6 यातायात, विभिन्न व्यवसाय आदि अन्य सेवाओं के लिए। ये निगम उत्पादन चक्रों पर आधारित थे। प्रत्येक निगम उत्पादन से वितरण एवं विक्रय तक की संपूर्ण प्रक्रिया को नियंत्रित करता था।

प्रत्येक निगम की एक पृथक कार्यकारिणी समिति होती थी, जिसकी सदस्य संख्या उसके कार्य क्षेत्र के अनुसार निर्धारित की गई थी। प्रत्येक समिति का अध्यक्ष **निगम मंत्री** या शासनाध्यक्ष **मुसोलिनी** होता था ।सभी निगमों की कार्यकारिणी समितियों को मिलाकर **राष्ट्रीय निगम परिषद** का गठन किया गया था ।इसके 500 सदस्य होते थे राष्ट्रीय निगम परिषद की एक **केंद्रीय निगम समिति** होती थी। इस समिति में प्रमुख मंत्री फासिस्ट दल के महासचिव, सिंडिकेट संघों के अध्यक्ष आदि होते थे ।ड्यूस **मुसोलिनी** 'राष्ट्रीय निगम

परिषद' का **अध्यक्ष** था।

1938 ई. के अंत में मुसोलिनी ने अंतिम कदम उठाया जिसके द्वारा चेंबर ऑफ डेपुटीज को समाप्त कर दिया गया और उसके स्थान पर **फासियो** और **निगमों की सभा** (Chamber of Fascio and Corporation)की स्थापना की गई ।इसमें 682 सदस्य रखे गए थे। इन सदस्यों में से 450 से अधिक सदस्य निगमों के प्रतिनिधि होते थे और शेष सदस्य फासिस्ट दल के प्रधान कर्मचारियों होते थे।

**पोप के साथ समझौता-** 1870 ई. में इटली के एकीकरण के समय पोप के समस्त प्रदेश छीन लिए गए थे। इससे पोप इटली राज्य का घोर विरोधी हो गया था ।उसने की इटली के सरकार से अपने संबंध विच्छेद कर लिया तथा इटली के कैथोलिक जनता से भी सरकार से संबंध विच्छेद करने की प्रार्थना की। वह अपने आप को '**वेटिकन का बंदी**' कहा करता था। यधपि मुसोलिनी धर्म के प्रति विशेष लगाव नहीं रखता था किंतु वह धर्म के राजनीतिक मूल्यों को समझता था। बहुसंख्यक इटलीवासियों के साथ फासिस्ट दल के लोग भी कैथोलिक थे, अतः उनका सहयोग एवं समर्थन प्राप्त करने तथा चर्च को राज्य के अनुकूल बनाने की दृष्टि से मुसोलिनी ने **पायस 11वें** के साथ **11 फरवरी 1929** को **रोम** के लेटरन महल में **लेटरन समझौता**(Lateran Accord) किया जिसके तहत राजनीतिक ,आर्थिक और धार्मिक संधियां हुई।

राजनीतिक संधि के तहत मुसोलिनी ने पोप को वेटिकन नगर का सार्वभौम राजा मान लिया। वह अपने राज्य में दूसरे देशों के राजदूत को बुलाने व भेजने के लिए स्वतंत्र था । पोप को रेडियो स्टेशन चलाने, सिक्का बनाने , तथा डाक टिकट प्रसारित करने का अधिकार मिल गया। अब वह वेटिकन का बंदी नहीं रहा।

आर्थिक समझौते के तहत मुसोलिनी ने पोप को 1870 ई. में जब्त की गई चर्च की संपत्ति के बदले 10 करोड़ डालर वार्षिक क्षतिपूर्ति देने की बात कही ।

धार्मिक समझौते के अनुसार कैथोलिक धर्म इटली का राजधर्म स्वीकार किया गया ।राज्य के विशपों की नियुक्ति का अधिकार पोप को सौंप दिया गया ।धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया। इसके अलावा चर्च के पदाधिकारियों को वेतन देने का कार्य सरकार करती।साथ ही धार्मिक विवाह को भी कानूनी विवाह के समान पवित्र मान लिया गया।

**इटली के आधुनिकीकरण का प्रयास-** मुसोलिनी ने वैज्ञानिकों, इंजीनियरों की सहायता से इटली को स्वावलंबी बनाना चाहा। लाखों एकड़ दलदलयुक्त भूमि को सुखाया, बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया। बांध एवं नहरों का निर्माण किया और ग्रामीण विद्युतीकरण को प्रोत्साहित किया। उसने जहाज निर्माण उद्योग को भी प्रोत्साहन दिया। विदेशी मोटर कारों पर आयात शुल्क बढ़ाया ,स्वदेशी मोटर कार कंपनी को समर्थन दिया। लोक निर्माण का विस्तृत कार्यक्रम आरंभ किया । इन तरीकों से बेरोजगारों को रोजगार तो

मिला ही इटलीवासियों को प्राचीन गौरव की याद भी दिलाई गई।

- **मुसोलिनी की विदेश नीति(Foreign Policy)-** फासीवादी विदेश नीति का प्राथमिक उद्देश्य देश के राष्ट्रीय सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना करना था। ऐसे में मुसोलिनी ने सैन्यीकरण, शस्त्रीकरण पर बल दिया ताकि उपनिवेश प्राप्ति सुनिश्चित हो सके।

1920 के दशक में इटली राष्ट्र संघ के सदस्य के रुप में यूरोपीय व्यवस्था का रक्षक था ।1925 में मुसोलिनी ने लोकार्नो पैक्ट में प्रतिपादित सुरक्षा सिद्धांत के चयन में अहम भूमिका अदा की।परंतु तीस के दशक में उसकी नीति आक्रमक हो गई ।इसके पीछे आर्थिक कारण प्रधान थे। इटली का पुनर्निर्माण अमेरिकी निवेश के बल पर हो रहा था और आर्थिक संकट में जब अमेरिकी निवेश वापस लिया गया तो इटली आर्थिक संकट की चपेट में आ गया।

विस्तार वादी विदेश नीति अपनाए जाने के पीछे राजनीतिक कारण पूर्व से ही विद्यमान थे ।पेरिस में प्रादेशिक लाभ की उसकी आकांक्षा धरी रह गई थी तथा इससे उसकी राष्ट्रीय चेतना को आघात लगा था।

मुसोलिनी ने अपनी विदेश नीति के दो उद्देश्य रखे। प्रथमः अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इटली को सम्मानित स्थान दिलाना तथा दूसरे भूमध्य सागर एवं अफ्रीका में इटली का विस्तृत साम्राज्य स्थापित करना ।मुसोलिनी ने घोषणा की कि जहां भूमध्य सागर ब्रिटेन और फ्रांस के लिए एक मार्ग है वही वह इटली के लिए जीवन का साधन है ।यद्यपि उस की इस घोषणा से भूमध्य सागर उसके लिए कारागार बन गया तथा ब्रिटेन सहित प्रमुख अंतरराष्ट्रीय शक्तियों से उसके मतभेद हो गए।

संभवत मुसोलिनी का उद्देश्य लीबिया को सूडान के मार्ग से इथोपिया के साथ जोड़ना था ताकि इटली के उत्तरी अफ्रीकी साम्राज्य तथा भूमध्य सागर को हिंद महासागर के साथ जोड़ा जा सके।

इन उद्देश्यों के लिए मुसोलिनी ने युद्ध की महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की। उसने स्थाई शांति एवं सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत का मजाक उड़ाया ।उसकी नजर में राष्ट्र संघ की कोई उपयोगिता नहीं थी। इस प्रकार उसकी विदेश नीति के प्रमुख तत्व **बल प्रयोग** ,**विस्तार वाद**, **साम्राज्यवाद** एवं **उपनिवेशवाद** थे।

प्रारम्भ में मुसोलिनी ने बहुत आक्रमक रुख नहीं अपनाया ।1923 की लोसान संधि द्वारा उसे रोड्स तथा डार्डेकनिज दीप समूहों पर अधिकार प्राप्त हो गया ।लेकिन जब उसने यूनान के कार्फू पर आक्रमण किया तो इंग्लैंड के दबाव में उसे कार्फू को खाली करना पड़ा तथा उसे 5 करोड़ लीरा यूनान द्वारा क्षतिपूर्ति के रूप में मिले।

पेरिस के शांति सम्मेलन में फ्यूम बंदरगाह के प्रश्न पर इटली एंव युगोस्लाविया के बीच

विवाद था। 1920 ईसवी में फ्यूम को स्वतंत्र बंदरगाह बना दिया गया परंतु 1924 में मुसोलिनी ने युगोस्लाविया के साथ समझौता कर फ्यूम बंदरगाह पर कब्जा कर लिया ।

अल्बानिया को पेरिस में स्वतंत्र मिल गई थी परंतु इटली द्वारा आर्थिक मदद देकर अल्बानिया को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाया गया। **27 नवम्बर 1926** के **टिराना(Tirana) की संधि** द्वारा अल्बानिया इटली का संरक्षित राज्य बन गया। अल्बानिया का इटली के लिए बहुत अधिक महत्व था क्योंकि वह भूमध्यसागर पर नियंत्रण स्थापित करना चाहता था ।इसके लिए उसे औटैर्नटो के जलडमरूमध्य पर प्रभाव स्थापित करना आवश्यक था। इस जलडमरूमध्य के एक ओर इटली तथा दूसरी और अल्बानिया स्थित थे। पेरिस शांति सम्मेलन में इटली ने अल्बानिया को मैण्डेट के रूप में प्रदान करने की मांग की थी जिसे राष्ट्रपति विल्सन ने ठुकरा दिया था। इस प्रकार अल्बानिया की प्राप्ति कर मुसोलिनी ने इटली के राष्ट्रवादीयों की प्रथम विश्वयुद्ध से चली आ रही है अभिलाषा को पूरा किया।

इन सब के बावजूद 1920 के दशक में इटली ने पश्चिमी शक्तियों से मित्रता कर ली। प्रारंभ में फ्रांस के साथ उसका संबंध तनावपूर्ण था। वस्तुत अफ्रीका, भूमध्य सागर और बाल्कन प्रदेशों में दोनों राष्ट्रों के बीच प्रतिद्वंदिता थी ।फ्रांस के विरोध में अपने दावे के समर्थन के लिए उसने 1924 ई. में रूस के साथ संधि की ।हिटलर के उत्थान के कारण 1935 में फ्रांस और इटली दोनों एक दूसरे के निकट आ गए तथा दोनों के बीच संधि हो गई।

अफ्रीका में इरिट्रिया, सोमालीलैंड एवं लीबिया में इटली के साम्राज्य पहले से ही स्थापित थे। 3अक्टूबर 1935 को मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर आक्रमण कर दिया। अंततः राष्ट्र संघ ने उसे आक्रामक घोषित कर उस पर आर्थिक पाबंदियां लगा दी। फ्रांस की सहानुभूति इटली के साथ थी। जर्मनी ने इटली को सक्रिय सहयोग देने का निर्णय लिया और **1936** में इटली और जर्मनी के बीच एक संधि हो गई जो **रोम- बर्लिन धुरी** के नाम से बिख्यात है।**1937** में इटली भी **कौमिन्टर्न विरोधी समझौते** में शामिल हो गया, जो साम्यवादी विचारधारा का विरोध करने के लिए जापान और जर्मनी के बीच हुई थी। इस तरह से **जर्मनी- जापान- इटली** का एक संघ बन गया जो **रोम- बर्लिन -टोक्यो धूरी** के नाम से जाना जाता है ।**1937** में मुसोलिनी ने राष्ट्र संघ की सदस्यता से त्यागपत्र देने की घोषणा की।

मुसोलिनी ने **1936** में **स्पेन के गृह युद्ध** में भी हस्तक्षेप किया तथा फासिस्ट नेता **जनरल फ्रैंको** की सहायता की। वस्तुतः मुसोलिनी का विचार था कि यदि फ्रैंको स्पेन में सफल हो जाता है तो भूमध्यसागर में इटली अपने प्रभुत्व में वृद्धि कर सकता है। इतना ही नहीं वह स्पेन में नौसेना एंव वायु सैनिक अड्डा बना सकता है और स्पेन से लोहा, तांबा, जस्ता रांगा जैसे युद्ध उपयोगी धातुओं को प्राप्त कर सकता है । स्पेन के गृह युद्ध में इटली ने जर्मनी के साथ भागीदारी निभाई अंततः 1939 में फ्रैंको विजयी हुआ और स्पेन में फासिज्म की स्थापना हुई। इससे राष्ट्र संघ की निर्बलता प्रमाणित हो गई। इसी निर्बलता का लाभ उठाकर

**1939** में मुसोलिनी अल्बानिया को इटली में मिला लिया।

1939 ई. में जर्मनी और इटली के बीच एक रक्षात्मक समझौता हुआ और जब 1939 में हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत की तो मुसोलिनी तुरंत उस के पक्ष में शामिल नहीं हुआ ।वह तटस्थ रहा और जब उसे हिटलर की सफलता का पूर्ण विश्वास हुआ तब **10 जून 1940** में मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध उसने जर्मनी की तरफ से युद्ध में शामिल हो गया। इस प्रकार उसकी विदेश नीति ने भले ही इटली के सम्मान को स्थापित किया हो किंतु विश्व शांति खतरे में पड़ गई।

BY-ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.

Last modified: 12:17